

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/5/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. जीवन के लिए जागना जितना ज़रूरी है, उतना ही ज़रूरी सोना है। दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे के सहारे पर हैं। नींद का न आना भी एक विकार है, जिससे अनेक प्रकार की बाधाएँ आ सकती हैं और जो प्राणी रात-दिन सोता ही रहे, वह तो निष्क्रिय ही है। यदि दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की सहायता करती रहें – आदमी जागे कर्म करने के लिए, सोये विश्राम के लिए – तो जीवन सुखी होता है, लेकिन जागना जीवन का मुख्य लक्षण है, सोना अर्थात् – विश्राम, तो केवल उसका सहायक है। इसलिए, जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है और निद्रा पतन तथा हास का। जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है, निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। कम-से-कम सोने के लिए अनेक उपाय और साधन बताए गए हैं। अधिक-से-अधिक सोने के लिए आज तक किसी ने कोई उपाय नहीं बताया – उसी तरह, जैसे स्वस्थ रहने के लिए तरह-तरह के प्रयत्न किए जाते हैं, पर बीमारी के लिए भी किसी ने कोई प्रयत्न किया है, ऐसा कभी सुनने में नहीं आया। वास्तव में स्वास्थ्य का न होना ही बीमारी है – उसी तरह, जैसे प्रकाश का न होना ही अंधकार है। आदमी जितना ही कम सोये उतना ही जागरूक है, यहाँ तक कि कई विद्वानों का मत है, सोना कोई आवश्यक क्रिया नहीं। संभव है तपस्वियों के लिए सोना आवश्यक न हो, उनकी प्रकृति में रज और सत ही रह जाता हो, तम की सर्वथा हानि हो जाती हो, पर साधारण प्राणियों के लिए भी यही नियम लागू है कि मात्रा से अधिक सोने में हानि है, अतएव जब हम किसी राष्ट्र के विषय में जागृति की कामना करते हैं, तो इसका बोध यह होता है कि वह राष्ट्र मात्रा से अधिक तमोगुणी हो गया और उसमें जीवन की मात्रा ज़रूरत से कम है।

[10 अंक]

1(i). 'जागृति' और 'निद्रा' किन गुणों से संबंधित हैं ?

[1 अंक]

- (A) सत और तम
- (B) रज और सत
- (C) सत और रज
- (D) रज और तम

सही उत्तर: (D) रज और तम

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त गुणों का संबंध उसी के स्पष्ट कथन से निर्धारित किया जाता है।
- प्रश्न में पहले जागृति और फिर निद्रा है, इसलिए गुणों का क्रम भी यही रहेगा।

चरण 1: गद्यांश का प्रमाण लेखक स्पष्ट कहता है कि जागृति रजोगुण-प्रधान क्रिया है और निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। अतः जागृति का संबंध रज तथा निद्रा का संबंध तम से है।

चरण 2: सभी विकल्पों का परीक्षण (A) में जागृति के लिए सत दिया है, इसलिए वह गलत है। (B) में निद्रा के लिए सत और (C) में जागृति के लिए सत तथा निद्रा के लिए रज है; ये भी कथन से मेल नहीं खाते। केवल (D) में रज और तम का सही क्रम है।

चरण 3: निष्कर्ष जागृति रजोगुण और निद्रा तमोगुण से संबंधित हैं। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: दो शब्दों वाले विकल्प में संबंध के साथ उनका क्रम भी गद्यांश के कथन से मिलाइए।

1(ii). गद्यांश के अनुसार सोना अर्थात् निद्रा किसकी सहायक है ?

[1 अंक]

- (A) स्वास्थ्य की
- (B) जागने की
- (C) विश्राम की
- (D) मृत्यु की

सही उत्तर: (B) जागने की

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में मुख्य क्रिया और उसकी सहायक क्रिया का संबंध पहचानने पर आधारित है।
- लेखक जागने को जीवन का मुख्य लक्षण और सोने को उसके लिए आवश्यक विश्राम मानता है।

चरण 1: मुख्य कथन पहचानना लेखक के अनुसार आदमी जागे कर्म करने के लिए और सोए विश्राम के लिए। इसके तुरंत बाद जागने को मुख्य लक्षण तथा विश्राम को उसका सहायक बताया गया है। इससे स्पष्ट है कि निद्रा जागने और कर्म करने की क्षमता को सहारा देती है।

चरण 2: विकल्पों में भेद करना (A) स्वास्थ्य सामान्य रूप से नींद से जुड़ सकता है, पर यहाँ पूछा गया विशिष्ट संबंध वह नहीं है। (C) में विश्राम दिया है, जबकि निद्रा स्वयं विश्राम है। (D) मृत्यु का गद्यांश में यह संबंध नहीं बताया गया। इसलिए (B) ही उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष सोना अर्थात् निद्रा जागने की सहायक है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सर्वनाम के ठीक पहले का कथन पढ़कर पहचानिए कि सहायक किस मुख्य क्रिया को कहा गया है।

1(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : जागना जीवन के लिए आवश्यक है।

कारण : जाग्रत हो ध्यानपूर्वक कर्म करने से ही, व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव है।

विकल्प :

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कथन सही है, किंतु कारण गलत है।
- (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण का सत्यापन गद्यांश के आशय के आधार पर अलग-अलग किया जाता है।
- दोनों सही होने पर यह भी देखना आवश्यक है कि कारण कथन की आवश्यकता स्पष्ट करता है या नहीं।

चरण 1: कथन की जाँच गद्यांश में जागना जीवन का मुख्य लक्षण बताया गया है। जागने पर ही मनुष्य कर्म कर सकता है। इसलिए जागना जीवन के लिए आवश्यक है वाला कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच लेखक जागृति को जीवन और अभ्युदय का चिह्न मानता है तथा राष्ट्र में जीवन की कमी को अत्यधिक तमोगुण से जोड़ता है। इसलिए सजग होकर कर्म करने से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति संभव होने का कारण सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध कारण बताता है कि उन्नति के लिए कर्म और कर्म के लिए जागृति आवश्यक है; इसलिए वह कथन की सही

व्याख्या करता है। (A) और (B) सत्यता के बारे में गलत हैं तथा (D) सही व्याख्या के संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कथन और कारण को अलग परखने के बाद उनके बीच कर्म और उन्नति का संबंध जोड़कर देखिए।

1(iv). 'जागृति' और 'निद्रा' किसके प्रतीक हैं ? गद्यांश के आधार पर बताइए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ किसी शब्द के माध्यम से व्यक्त व्यापक भाव है।
- यहाँ जागृति और निद्रा का अर्थ लेखक द्वारा बताए गए जीवनगत प्रभावों से स्पष्ट होता है।

चरण 1: जागृति का आशय गद्यांश में जागृति को जीवन और अभ्युदय का चिह्न कहा गया है। जागा हुआ व्यक्ति कर्म करता है और सक्रिय रहता है। इस प्रकार जागृति जीवन की सक्रियता तथा उन्नति का प्रतीक बनती है।

चरण 2: निद्रा का आशय लेखक निद्रा को पतन तथा हास का चिह्न बताता है। अधिक सोने वाला प्राणी निष्क्रिय हो जाता है। यहाँ निद्रा का प्रतीकात्मक संबंध इसी जड़ता और अवनति से है; आवश्यक विश्राम की उपयोगिता का लेखक अलग से समर्थन करता है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के अनुसार जागृति जीवन और अभ्युदय की तथा निद्रा पतन और हास की प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक पूछे जाने पर केवल गुणों के नाम न लिखें; लेखक के दिए व्यापक भाव को पहचानिए।

1(v). 'जागना' और 'सोना' दोनों क्रियाएँ एक-दूसरे की पूरक कैसे हैं ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पूरक क्रियाएँ एक-दूसरे को सहारा देकर जीवन का संतुलन बनाए रखती हैं।
- गद्यांश में जागने का उद्देश्य कर्म और सोने का उद्देश्य विश्राम बताया गया है।

चरण 1: जागने और सोने की भूमिकाएँ मनुष्य जागकर अपने कार्य करता है और जीवन की सक्रियता बनाए रखता है। कर्म करने के बाद उसे विश्राम की आवश्यकता होती है, जिसकी पूर्ति सोने से होती है। इस प्रकार सोना जागने की क्रिया का सहायक है और उसे फिर से कर्म के योग्य बनाता है।

चरण 2: दोनों के संतुलन की आवश्यकता गद्यांश में नींद न आने को विकार कहा गया है, जिससे अनेक बाधाएँ आ सकती हैं। दूसरी ओर, रात-दिन सोते रहने वाला प्राणी निष्क्रिय हो जाता है। इसलिए केवल जागते रहना या केवल सोते रहना जीवन को सुखी नहीं बनाता। आवश्यक विश्राम और सक्रिय कर्म को एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

चरण 3: उत्तर का समन्वय जब व्यक्ति कर्म करने के लिए जागता और विश्राम के लिए सोता है, तब दोनों क्रियाएँ परस्पर सहायक रहती हैं। लेखक के अनुसार इसी सहयोग से जीवन सुखी होता है। सोने की भूमिका मुख्य क्रिया जागने और कर्म करने को सहारा देना है।

चरण 4: निष्कर्ष जागकर मनुष्य कर्म करता है और सोकर आवश्यक विश्राम पाता है। विश्राम उसे पुनः कर्मशील बनाता है; इसीलिए जागना और सोना एक-दूसरे की पूरक क्रियाएँ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कर्म, विश्राम और संतुलन तीनों संबंध जोड़िए; केवल नींद के लाभ लिखकर न रुकिए।

1(vi). लेखक के अनुसार 'किसी राष्ट्र की जागृति' का क्या तात्पर्य है ? उल्लेख कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राष्ट्र की जागृति का अर्थ गद्यांश में सामूहिक सक्रियता और जीवनशक्ति के संदर्भ में समझना है।
- लेखक अधिक तमोगुण को निष्क्रियता तथा जीवन की मात्रा में कमी से जोड़ता है।

चरण 1: अंतिम कथन का संदर्भ लेखक कहता है कि जब किसी राष्ट्र की जागृति की कामना की जाती है, तो इससे बोध होता है कि वह आवश्यकता से अधिक तमोगुणी हो गया है। उसमें जीवन की मात्रा कम है, अर्थात् सक्रियता और कर्मशीलता का अभाव है। यह कथन केवल व्यक्तियों की शारीरिक नींद के विषय में नहीं है।

चरण 2: जागृति का सकारात्मक आशय ऐसे राष्ट्र की जागृति चाहने का अर्थ है कि वह जड़ता और निष्क्रियता से बाहर आए। उसमें सजगता, कर्म की प्रेरणा और जीवन का उत्साह बढ़े। गद्यांश में जागृति जीवन और अभ्युदय का चिह्न है; इसलिए राष्ट्र की जागृति उसकी सामूहिक सक्रियता और उन्नति की कामना है।

चरण 3: उत्तर की दिशा स्पष्ट करना यहाँ राष्ट्र के लिए जागना एक व्यापक भाव रखता है। जिस प्रकार मनुष्य जागकर कर्म करता है, उसी प्रकार राष्ट्र भी तमोगुण की अधिकता छोड़कर प्रगति की दिशा में सक्रिय हो। उत्तर को इसी गद्यांशगत अर्थ तक सीमित रखना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष किसी राष्ट्र की जागृति का तात्पर्य उसकी अत्यधिक तमोगुणी निष्क्रियता को दूर कर उसमें सजगता, कर्मशीलता और जीवनशक्ति जगाना है, ताकि वह उन्नति कर सके।

त्वरित सुझाव: राष्ट्र की जागृति को शाब्दिक नींद से जोड़ने के बजाय अंतिम वाक्य की तमोगुण और जीवनशक्ति वाली तुलना से समझिए।

1(vii). निद्रा को किस गुण की प्रधानता से जोड़ा गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गुण की पहचान के लिए गद्यांश का सीधा कथन और उसका कारण दोनों देना आवश्यक है।
- लेखक के विचार में निद्रा विश्राम की अवस्था है, जबकि जागृति कर्म और सक्रियता से जुड़ी है।

चरण 1: प्रधान गुण की पहचान गद्यांश में स्पष्ट लिखा है कि निद्रा में तमोगुण की प्रधानता होती है। इसके विपरीत जागृति को रजोगुण-प्रधान क्रिया बताया गया है। अतः निद्रा के लिए सत या रज नहीं, बल्कि तम का उल्लेख किया जाएगा।

चरण 2: संबंध का कारण निद्रा में व्यक्ति सक्रिय कर्म से हटकर विश्राम करता है। लेखक रात-दिन सोने वाले प्राणी को निष्क्रिय कहता है और मात्रा से अधिक सोने को हानिकारक मानता है। इसी निष्क्रियता तथा जड़ता के कारण वह निद्रा को तमोगुण से जोड़ता है। जागृति की कर्मशीलता के विपरीत यह अवस्था सक्रियता को कम करती है।

चरण 3: आवश्यक विश्राम से भेद लेखक आवश्यक निद्रा को निरर्थक नहीं मानता; वह उसे जागने की सहायक क्रिया कहता है। उसका संकेत यह है कि निद्रा की अधिकता से कर्मशीलता घटती है, इसलिए उसका तमोगुण से संबंध है। इस प्रकार कारण बताते समय अत्यधिक सोने से पैदा होने वाली निष्क्रियता का उल्लेख उपयुक्त है।

चरण 4: निष्कर्ष निद्रा को तमोगुण की प्रधानता से जोड़ा गया है, क्योंकि वह निष्क्रियता और विश्राम की अवस्था है तथा उसकी अधिकता जड़ता, पतन और ह्रास को बढ़ाती है।

त्वरित सुझाव: किस गुण और क्यों वाले प्रश्न में पहले तमोगुण लिखिए, फिर गद्यांश से निष्क्रियता का कारण स्पष्ट कीजिए।

2. दुनिया का सबसे बड़ा अधम –

हाँ, हाँ, दुनिया का सबसे बड़ा अधम नर वही था
जिसकी ज़बान से यह निकला था पहले-पहल –
भूमि यह मेरी है !

“भूमि यह मेरी है ?”

झूठा, मक्कार था !

असत्य, अन्याय का अवतार था !

दुनिया का सबसे बड़ा अधम !!

नीचे की धरती और ऊपर का आसमान,

पानी और पवन –

प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए,

इन पर है सबका अधिकार;

सबका समान अधिकार

हवा को क्या बाँटोगे ?

पानी को बाँटोगे ?

बाँटोगे नीले आसमान को ?

बाँट भी सकोगे क्या ?

धरती बेचारी बेबस थी –

पैरों के नीचे

अचल पड़ी थी, निरीह;

कह दिया –

“भूमि यह मेरी है” –

बाँट लिया टुकड़ों में,

एक मुट्ठी लोगों ने,

मानो माता के आँचल को दाँतों से चीरकर

बाँट लिया कुछ शैतान बच्चों ने;

टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़

रोती रही दुखिया बेचारी माँ !

दुनिया का सबसे बड़ा अधम !

[8 अंक]

2(i). इस काव्यांश का केंद्रीय भाव है :

[1 अंक]

- (A) प्राकृतिक संसाधनों का सृजन
- (B) भूमि का वैज्ञानिक वितरण
- (C) भूमि पर सबका समान अधिकार
- (D) भूमि के इतिहास का वर्णन

सही उत्तर: (C) भूमि पर सबका समान अधिकार

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पूरे काव्यांश में व्यक्त मूल विचार होता है, केवल किसी एक शब्द या प्रसंग का उल्लेख नहीं।
- कवि प्रकृति की देन पर जीवमात्र के समान अधिकार का समर्थन करता है।

चरण 1: मुख्य कथन पहचानें कवि स्पष्ट कहता है कि धरती, आसमान, पानी और पवन प्रकृति की देन हैं तथा इन पर सबका समान अधिकार है। भूमि को कुछ लोगों द्वारा टुकड़ों में बाँट लेना इसी समानता का उल्लंघन है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करें (A) में संसाधनों के सृजन की बात है, जबकि कविता उनके अधिकार की बात करती है। (B) में वैज्ञानिक वितरण का उल्लेख है, जिसकी कोई विधि यहाँ नहीं दी गई। (D) भूमि का इतिहास बताता है, जबकि कवि अन्यायपूर्ण निजी दावे की निंदा करता है। (C) कविता के प्रतिपाद्य से सीधा मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भूमि पर सबका समान अधिकार इस काव्यांश का केंद्रीय भाव है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: केंद्रीय भाव चुनते समय बार-बार आए विचार को पहचानें; यहाँ निर्णायक पद है 'सबका समान अधिकार'।

2(ii). “प्रकृति की देन हैं ये जीवमात्र के लिए” इस पंक्ति से कवि का अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) व्यक्तिगत अधिकार
- (B) जातीय विभाजन
- (C) धार्मिक आस्था
- (D) सामूहिक स्वामित्व

सही उत्तर: (D) सामूहिक स्वामित्व

हल:

अवधारणा:

- किसी पंक्ति का आशय उसके आसपास की पंक्तियों से स्पष्ट किया जाता है।
- 'जीवमात्र' सभी प्राणियों को समेटता है और किसी एक व्यक्ति या समुदाय तक सीमित नहीं है।

चरण 1: जीवमात्र का अर्थ समझें प्रकृति ने धरती, आकाश, जल और वायु सभी प्राणियों के लिए उपलब्ध कराए हैं। अगली पंक्तियाँ 'इन पर है सबका अधिकार; सबका समान अधिकार' इसी व्यापक अर्थ को स्पष्ट करती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों को परखें (A) का व्यक्तिगत अधिकार कविता द्वारा अस्वीकार किए गए एकाधिकार से जुड़ा है। (B) का जातीय विभाजन सभी प्राणियों के समान अधिकार के विरुद्ध है। (C) की धार्मिक आस्था इस पंक्ति का विषय नहीं है। (D) का सामूहिक स्वामित्व साझा अधिकार के भाव को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति की देन पर सबका साझा अधिकार है। अतः सही विकल्प (D), सामूहिक स्वामित्व, है।

त्वरित सुझाव: 'जीवमात्र' और 'सबका' जैसे व्यापक शब्द देखकर किसी संकीर्ण व्यक्ति या समुदाय तक सीमित विकल्प हटाएँ।

2(iii). “माता के आँचल को दाँतों से चीरना” इस पंक्ति का आज के संदर्भ में सटीक अर्थ क्या है ?

[1 अंक]

- (A) जैविक खेती को प्रोत्साहन
- (B) वनों की अंधाधुंध कटाई
- (C) हरित ऊर्जा का विकास
- (D) जल संरक्षण योजनाएँ

सही उत्तर: (B) वनों की अंधाधुंध कटाई

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में धरती को माँ और उसके प्राकृतिक विस्तार को आँचल के रूप में देखा गया है।
- दाँतों से चीरने का बिंब स्वार्थपूर्ण, निर्मम विनाश का संकेत देता है।

चरण 1: बिंब का भाव समझें कवि भूमि को कुछ स्वार्थी लोगों द्वारा टुकड़ों में बाँटने की तुलना माता का आँचल चीरने से करता है। इसमें संरक्षण के स्थान पर प्रकृति को क्षति पहुँचाने और उसकी गरिमा नष्ट करने का भाव है।

चरण 2: आज के संदर्भ से जोड़ें वनों की अंधाधुंध कटाई प्रकृति को निर्ममता से क्षति पहुँचाती है, इसलिए (B) इस विनाशकारी भाव से मेल खाता है। (A) की जैविक खेती, (C) की हरित ऊर्जा और (D) की जल संरक्षण योजनाएँ प्रकृति की रक्षा के प्रयास हैं; ये आँचल चीरने के भाव को व्यक्त नहीं करतीं।

चरण 3: निष्कर्ष आज के संदर्भ में यह बिंब वनों की अंधाधुंध कटाई का संकेत देता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: बिंब में निहित सकारात्मक या नकारात्मक भाव पहले पहचानें; ‘चीरना’ विनाश बताता है, संरक्षण नहीं।

2(iv). यदि ‘भूमि यह मेरी है’ की भावना समाज में व्याप्त नहीं होगी तो दुनिया की संरचना कैसी होगी ?

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि प्राकृतिक संसाधनों पर सबका समान अधिकार स्वीकार करता है।
- भूमि पर स्वार्थपूर्ण एकाधिकार हटने का परिणाम काव्यांश के इसी समानतावादी विचार से निकाला जाता है।

चरण 1: मूल विरोध पहचानें काव्यांश में विरोध उस भावना से है जिसके कारण मुट्ठी-भर लोगों ने भूमि को अपनी संपत्ति बताकर बाँट लिया। इससे अन्य लोगों का समान अधिकार छिन गया और धरती को पीड़ित माँ के रूप में दिखाया गया।

चरण 2: संभावित समाज स्पष्ट करें ऐसी स्वामित्व-लालसा न होने पर भूमि को सबकी साझा धरोहर समझा जाएगा। किसी छोटे समूह का एकाधिकार नहीं होगा और सभी को उसके उपयोग का समान अवसर मिलेगा। समाज में शोषण तथा अन्याय कम होंगे और सहयोग, समानता एवं भाईचारे का वातावरण बनेगा।

चरण 3: निष्कर्ष दुनिया समतामूलक और सहयोगपूर्ण होगी; भूमि पर सबका समान अधिकार होगा तथा स्वार्थपूर्ण एकाधिकार से उपजा शोषण घटेगा।

त्वरित सुझाव: काल्पनिक परिणाम बताते समय कविता के मूल विरोध को उलटें: एकाधिकार के स्थान पर समान अधिकार स्थापित करें।

2(v). 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' किसे कहा गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में व्यक्ति की पहचान और उसके लिए प्रयुक्त कठोर विशेषण का कारण, दोनों बताने हैं।
- कवि का नैतिक निर्णय प्रकृति पर सभी के समान अधिकार की मान्यता पर आधारित है।

चरण 1: व्यक्ति की पहचान करें 'दुनिया का सबसे बड़ा अधम' उस व्यक्ति को कहा गया है जिसने सबसे पहले 'भूमि यह मेरी है' कहकर धरती पर अपना निजी अधिकार जताया। यहाँ किसी नामित ऐतिहासिक व्यक्ति की चर्चा नहीं है; कवि उस स्वार्थपूर्ण दावे की शुरुआत करने वाले व्यक्ति की निंदा करता है।

चरण 2: निंदा का कारण समझाएँ धरती भी पानी, पवन और आकाश की तरह प्रकृति की देन है तथा सभी जीवों के लिए है। उसे अपनी बताना सबके समान अधिकार को नकारना है। इसी दावे के आधार पर मुट्ठी-भर लोगों ने भूमि के टुकड़े कर लिए और अन्य लोग देखते रह गए। कवि इसे असत्य तथा अन्याय मानता है और इसकी क्रूरता को माता का आँचल चीरने की उपमा से स्पष्ट करता है। इसलिए यह व्यक्ति स्वार्थ, अधिकार-हरण और अन्याय का आरंभकर्ता ठहरता है।

चरण 3: निष्कर्ष जिसने सबसे पहले भूमि को अपनी घोषित किया, वही सबसे बड़ा अधम कहा गया है, क्योंकि उसने प्रकृति की साझा देन पर निजी अधिकार जताकर दूसरों के समान अधिकार का हनन किया।

त्वरित सुझाव: 'किसे और क्यों' वाले प्रश्न में पहले पहचान लिखें, फिर 'सबका समान अधिकार' वाली पंक्तियों से कारण जोड़ें।

2(vi). 'टुकुर-टुकुर ताकते रह गए शरीफ़' पंक्ति में किन लोगों पर व्यंग्य किया गया है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में किसी व्यक्ति या समूह की कमजोरी को संकेतपूर्ण ढंग से उजागर किया जाता है।
- इस पंक्ति का अर्थ भूमि बाँटने वाले स्वार्थी लोगों और चुप रहकर देखने वाले सज्जनों के विरोध से खुलता है।

चरण 1: व्यंग्य का लक्ष्य पहचानें यहाँ उन शरीफ़ अथवा सज्जन लोगों पर व्यंग्य है जो भूमि पर मुट्ठी-भर लोगों का अन्यायपूर्ण कब्ज़ा होते देखते रहे। वे स्वयं उस स्वार्थपूर्ण बँटवारे में सक्रिय नहीं थे, पर उन्होंने सबके अधिकार छिनने पर उसका विरोध भी नहीं किया।

चरण 2: निष्क्रियता का कारण और प्रभाव समझें 'टुकुर-टुकुर ताकते रह गए' उनकी मूक दर्शक बने रहने की स्थिति बताता है। कविता इस बात पर चोट करती है कि सज्जन कहलाना पर्याप्त नहीं, अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना भी आवश्यक है। उनकी चुप्पी से स्वार्थी लोगों को धरती बाँटने से रोका नहीं जा सका और साझा अधिकार का हनन होता रहा। 'रोती रही दुखिया बेचारी माँ' की अगली छवि इस निष्क्रियता के बीच धरती की पीड़ा को और उभारती है।

चरण 3: निष्कर्ष व्यंग्य उन निष्क्रिय सज्जनों पर है जो अन्यायपूर्ण भूमि-विभाजन देखते रहे, किंतु विरोध करके सबके समान अधिकार की रक्षा नहीं कर सके।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य का लक्ष्य बताते समय 'शरीफ़' के साथ 'ताकते रह गए' पढ़ें; आलोचना उनकी निष्क्रिय दर्शक-भूमिका की है।

3(i). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्वच्छता : आज की आवश्यकता

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय के प्रति संवेदनशील दृष्टि, विचारों का क्रम और भाषा की सहजता आवश्यक है। स्वच्छता का संबंध व्यक्तिगत आदतों के साथ सार्वजनिक जीवन से भी है।
- लगभग 120 शब्दों में भूमिका, समस्या, उपाय और प्रभावपूर्ण समापन समेटना चाहिए। केवल नारे लिखने के स्थान पर जीवन से जुड़े उदाहरण लेख को सार्थक बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और दृष्टिकोण तय कीजिए सबसे ऊपर विषयानुकूल शीर्षक लिखिए। आरंभ में स्वच्छ परिवेश का एक छोटा चित्र प्रस्तुत कीजिए और उससे आज की आवश्यकता तक पहुँचिए। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र की तरह पता या संबोधन देने की आवश्यकता नहीं है। भाषा मौलिक, स्पष्ट और विषय पर केंद्रित रखिए।

चरण 2: विचारों को क्रम दीजिए पहले गंदगी के स्वास्थ्य तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव बताइए। फिर कचरे का पृथक्करण, प्लास्टिक का कम उपयोग और सार्वजनिक स्थानों की सफाई जैसे व्यावहारिक उपाय रखिए। अंत में नागरिक जिम्मेदारी का संदेश दीजिए। समस्याओं की लंबी सूची बनाने के बजाय समस्या और समाधान के बीच संतुलन रखिए।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख स्वच्छता : आज की आवश्यकता

सुबह की ताजी हवा में स्वच्छ सड़क पर चलना कितना सुखद लगता है! किंतु जगह-जगह पड़े कूड़े के ढेर यह सुख छीन लेते हैं। स्वच्छता केवल सुंदरता नहीं, स्वस्थ जीवन की पहली शर्त है। गंदा पानी और जमा कचरा बीमारियाँ फैलाते हैं। इसलिए आज सफाई को आदत बनाना आवश्यक है।

हमें गीला और सूखा कचरा अलग रखना चाहिए। प्लास्टिक का प्रयोग घटाकर कपड़े के थैले अपनाने चाहिए। घर साफ करके कूड़ा सड़क पर फेंक देना स्वच्छता नहीं है। विद्यालय, बाजार और पार्क भी हमारी साझा जिम्मेदारी हैं। सफाईकर्मियों का सम्मान तथा नगर सेवाओं में सहयोग जरूरी है। जब प्रत्येक नागरिक अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएगा, तभी स्वच्छ भारत का सपना साकार होगा। शुरुआत आज अपने घर से करें।

चरण 4: निष्कर्ष लेख का केंद्रीय संदेश है कि स्वच्छता स्वस्थ जीवन की आवश्यकता और प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में एक सजीव आरंभ, दो-तीन ठोस उपाय और छोटा प्रेरक समापन रखिए; एक ही बात बार-बार न दोहराइए।

3(ii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

प्रकृति से टूटता नाता

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेखन में किसी अनुभव या दृश्य से विचार तक पहुँचना लेख को प्रभावपूर्ण बनाता है। इस विषय में आधुनिक जीवन और प्रकृति के बीच बढ़ती दूरी पर संवेदनशील चिंतन अपेक्षित है।
- लेख में प्रकृति से दूरी के कारण, उसके परिणाम और संबंध सुधारने के उपाय क्रमबद्ध रूप से रखे जाने चाहिए। लगभग 120 शब्दों की सीमा में विषय से भटकाव से बचना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और आरंभ चुनिए विषय को शीर्षक बनाकर एक छोटे, सजीव दृश्य से शुरुआत कीजिए। खिड़की के बाहर पेड़ के स्थान पर इमारतें दिखाई देना प्रकृति से दूरी का उपयुक्त संकेत हो सकता है। शीर्षक के बाद सीधे लेख लिखिए; पत्र का प्रारूप या अनावश्यक संबोधन मत जोड़िए।

चरण 2: सामग्री की रूपरेखा बनाइए पहले शहरीकरण और व्यस्त जीवन से बढ़ती दूरी दिखाइए। फिर पेड़ों, पक्षियों और हरियाली की कमी को मनुष्य के जीवन से जोड़िए। अंत में पौधे लगाने, उनकी देखभाल करने और प्रकृति के लिए समय निकालने जैसे संभव उपाय दीजिए। लेख को केवल शिकायत तक सीमित रखने के बजाय व्यक्तिगत जिम्मेदारी तक ले जाइए।

चरण 3: पूर्ण नमूना लेख प्रकृति से टूटता नाता

कभी सुबह चिड़ियों की चहचहाहट से खुलती थी; अब मोबाइल की घंटी हमें जगाती है। खिड़की के बाहर पेड़ों की जगह ऊँची इमारतें दिखाई देती हैं। सुविधा की दौड़ में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। बच्चों के लिए मिट्टी में खेलना और तितली देखना दुर्लभ अनुभव बन रहे हैं।

यह दूरी केवल दृश्य नहीं बदलती, हमारे जीवन का संतुलन भी बिगाड़ती है। घटती हरियाली, प्रदूषित हवा और बढ़ती गर्मी हमें चेतावनी देते हैं। प्रकृति से संबंध जोड़ने के लिए बड़े अवसर की प्रतीक्षा क्यों करें? एक पौधा लगाएँ, उसकी देखभाल करें और प्रतिदिन कुछ समय खुले आकाश के नीचे बिताएँ। प्रकृति हमारी संपत्ति मात्र नहीं, जीवन की सहयात्री है। उससे जुड़ना वास्तव में अपने भविष्य को बचाना है।

चरण 4: निष्कर्ष लेख बताता है कि प्रकृति से बढ़ती दूरी जीवन का संतुलन बिगाड़ती है; छोटी, नियमित पहल से यह संबंध फिर मजबूत हो सकता है।

त्वरित सुझाव: प्रकृति पर लिखते समय किसी परिचित दृश्य से आरंभ कीजिए और अंतिम पंक्ति में उसी चिंता का व्यावहारिक समाधान या स्पष्ट संदेश दीजिए।

3(iii). निम्नलिखित दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

मोबाइल में कैद जीवन

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा कोई सजीव दृश्य, अनुभव या विचार प्रस्तुत किया जाता है। मोबाइल की सुविधा और उसके अति प्रयोग से उपजी दूरी को मानवीय संवेदना के साथ जोड़ना इस विषय का केंद्र है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में उपयुक्त शीर्षक, विचारों का स्वाभाविक क्रम और प्रभावी अंत होना चाहिए। केवल लाभ या हानियों की सूची देने के स्थान पर जीवन का अनुभव चित्रित करना चाहिए।

चरण 1: लेख की रूपरेखा बनाएँ शीर्षक के बाद एक ही कमरे में बैठे परिवार का दृश्य लिया जा सकता है। फिर मोबाइल से मिलने वाली सुविधा का उल्लेख करते हुए वास्तविक बातचीत, खेल और प्रकृति से बनती दूरी दिखाएँ। अंत में संतुलित उपयोग का संकेत दें, जिससे लेख केवल शिकायत बनकर न रह जाए। परिवार, कहानी और इमोजी जैसे बिंब विषय को अनुभव से जोड़ते हैं। प्रश्नात्मक वाक्य पाठक को अपने व्यवहार पर सोचने के लिए प्रेरित करता है और अंतिम आह्वान लेख को सकारात्मक दिशा देता है।

चरण 2: पूर्ण रचनात्मक लेख मोबाइल में कैद जीवन

शाम का समय है। परिवार एक ही कमरे में बैठा है, पर सबकी दुनिया अलग-अलग स्क्रीन पर खुली है। दादी की कहानी सुनने वाला कोई नहीं; बच्चे की हँसी भी अब इमोजी बन गई है। मोबाइल ने दूर बैठे अपनों को पास किया, लेकिन पास बैठे लोगों के बीच अनदेखी दीवार भी खड़ी कर दी। पढ़ाई, खरीदारी और बातचीत आसान हुई, पर नींद, खेल और प्रकृति से हमारा रिश्ता कमजोर पड़ने लगा। हर सूचना पर उठती उँगली मानो अपनी स्वतंत्रता भूल गई है। क्या जीवन केवल चमकते पर्दे तक सीमित है? आइए, कुछ समय मोबाइल को विश्राम दें। अपनों की आँखों में देखें, खुली हवा में चलें और महसूस करें कि असली दुनिया किसी स्क्रीन से कहीं अधिक सुंदर है।

चरण 3: निष्कर्ष मोबाइल जीवन को सुविधाजनक बनाने का साधन है। प्रस्तुत लेख उसके अति प्रयोग से घटते पारिवारिक संवाद का चित्र खींचकर वास्तविक संबंधों और संतुलित उपयोग की ओर लौटने का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: पहले एक परिचित दृश्य चुनें, फिर उससे विषय का संदेश जोड़ें; लगभग 120 शब्दों के लेख में लंबी भूमिका से बचें।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो ध्वनि, स्वर व शब्दों का खेल है – कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; श्रोता दृश्य देखे बिना ध्वनियों को सुनकर घटना या वातावरण की कल्पना करता है।
- शब्द अर्थ देते हैं, स्वर भाव और आशय स्पष्ट करता है तथा ध्वनि प्रभाव और संगीत वातावरण रचते हैं। इसलिए रेडियो की प्रस्तुति इन सबके मेल से प्रभावशाली बनती है।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की आवश्यकता समझें रेडियो में दृश्य दिखाने की सुविधा नहीं होती। इसलिए घटना, पात्र और परिवेश श्रोता तक सुनने योग्य रूप में पहुँचते हैं। सरल शब्द, बोलचाल की भाषा, स्पष्ट उच्चारण तथा स्वर के उतार-चढ़ाव से बात समझने और भाव ग्रहण करने में सहायता मिलती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर रेडियो में दृश्य नहीं दिखते। शब्द अर्थ स्पष्ट करते हैं, स्वर का उतार-चढ़ाव भाव जगाता है और ध्वनि प्रभाव तथा संगीत वातावरण रचते हैं। इनके मेल से श्रोता मन में दृश्य बना लेता है; इसलिए रेडियो ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो की प्रभावशीलता अर्थपूर्ण शब्दों, भावानुकूल स्वर और उपयुक्त ध्वनि प्रभाव के सामंजस्य पर निर्भर करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शब्द, स्वर और ध्वनि प्रभाव की अलग-अलग भूमिका बताएँ और उन्हें रेडियो के श्रव्य स्वरूप से जोड़ें।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘एंकर विजुअल’ का क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन में समाचार की प्रस्तुति सुनने और देखने, दोनों के माध्यम से होती है। समाचार वाचक के कथन और उससे संबंधित दृश्य के तालमेल से सूचना स्पष्ट बनती है।
- एंकर विजुअल प्रस्तुति में एंकर समाचार की जानकारी देता है और उसी से संबंधित उपलब्ध दृश्य पर्दे पर दिखाए जाते हैं। केवल स्टूडियो में एंकर का दिखाई देना इस पद का पूरा अर्थ नहीं है।

चरण 1: प्रस्तुति की प्रक्रिया स्पष्ट करें एंकर पहले दर्शक को समाचार का परिचय देता है। उसके बाद खबर से संबंधित दृश्य दिखाए जाते हैं और एंकर की आवाज में आवश्यक विवरण सुनाई देता है। शब्दों और चित्रों का संबंध बना रहना चाहिए, जिससे दर्शक घटना को सुनने के साथ देख भी सके।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर एंकर विजुअल टेलीविजन समाचार की वह प्रस्तुति है जिसमें एंकर खबर का परिचय देता है, फिर उससे संबंधित दृश्य पर्दे पर दिखाए जाते हैं। दृश्यों के साथ एंकर की आवाज में समाचार का विवरण चलता है, जिससे घटना अधिक स्पष्ट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर विजुअल का अभिप्राय एंकर के समाचार विवरण के साथ उसी खबर से संबंधित दृश्य प्रस्तुत करना है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में एंकर की आवाज और समाचार से संबंधित दृश्य, दोनों का उल्लेख करें; इसे केवल एंकर के चित्र तक सीमित न करें।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘नेट साउंड’ किसे कहते हैं ? दूरदर्शन के संदर्भ में समझाइए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दूरदर्शन समाचार में दृश्य के साथ घटनास्थल की स्वाभाविक ध्वनियाँ भी सूचना देती हैं। इन्हीं वास्तविक ध्वनियों को ‘नेट साउंड’ कहा जाता है।
- इसका संबंध घटनास्थल पर रिकॉर्ड हुई आवाज़ों से है; बाद में जोड़े गए संगीत या संवाददाता की व्याख्या से नहीं।

चरण 1: शब्द का अर्थ समझिए ‘नेट साउंड’ का अर्थ प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक ध्वनि है। किसी समाचार के लिए दृश्य रिकॉर्ड करते समय परिवेश में जो वास्तविक आवाज़ें रिकॉर्ड होती हैं, वे दृश्य के संदर्भ को स्पष्ट करती हैं। उदाहरण के लिए जनसभा की तालियाँ या सड़क पर वाहनों का शोर उसी घटना का हिस्सा हैं।

चरण 2: दूरदर्शन में उपयोग पहचानिए टेलीविजन में दर्शक दृश्य को देखता और उससे जुड़ी ध्वनि को सुनता है। घटनास्थल की आवाज़ें उसे वहाँ के वातावरण का अनुभव कराती हैं। इसलिए नेट साउंड समाचार को जीवंत और विश्वसनीय बनाता है। इसे संवाददाता के वॉयस ओवर या अलग से जोड़े गए पार्श्वसंगीत के साथ नहीं मिलाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष दूरदर्शन में ‘नेट साउंड’ घटनास्थल पर रिकॉर्ड की गई प्राकृतिक ध्वनियाँ हैं, जैसे भीड़ की आवाज़, तालियाँ या वाहनों का शोर। इन्हें दृश्यों के साथ प्रस्तुत करने से समाचार जीवंत, प्रामाणिक बनता है और दर्शक घटना के वातावरण को अनुभव करता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्राकृतिक ध्वनि की परिभाषा लिखिए, फिर घटनास्थल का एक उदाहरण देकर उसकी प्रामाणिकता स्पष्ट कीजिए।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार लेखन की मानक शैली कौन-सी है ? इसकी विशेषताएँ बताइए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार की मानक शैली ‘उल्टा पिरामिड शैली’ है। इसमें सूचनाओं का क्रम उनके महत्त्व के अनुसार तय होता है।
- इंट्रो में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य आते हैं; उसके बाद व्याख्या, विवरण और पृष्ठभूमि क्रमशः घटते महत्त्व में दी जाती है।

चरण 1: शैली का नाम और क्रम बताइए उल्टे पिरामिड का चौड़ा हिस्सा ऊपर होता है। इसी प्रकार समाचार का आरंभ सबसे आवश्यक जानकारी से होता है। इंट्रो पाठक को घटना की मुख्य बात बताता है। उसके बाद संबंधित विवरण और कम आवश्यक सूचनाएँ रखी जाती हैं। समाचार कहानी की तरह अंत में मुख्य बात प्रकट नहीं करता।

चरण 2: शैली की विशेषताएँ समझिए इस व्यवस्था में पाठक आरंभिक अनुच्छेद पढ़कर समाचार का सार जान लेता है। आगे की व्याख्या उसकी जानकारी बढ़ाती है। स्थान की कमी होने पर अंतिम अनुच्छेद हटाए जा सकते हैं, क्योंकि मुख्य सूचना पहले से उपस्थित रहती है। इसलिए विवरण का महत्त्व क्रमशः घटता है और समाचार संक्षिप्त करने पर भी उसका केंद्रीय अर्थ बचा रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन की मानक शैली ‘उल्टा पिरामिड शैली’ है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना इंट्रो में तथा अन्य विवरण घटते महत्त्व के क्रम में आते हैं। पाठक आरंभ में सार जान लेता है और अंतिम अंश हटाने पर मुख्य सूचना सुरक्षित रहती है।

त्वरित सुझाव: उल्टे पिरामिड का ऊपर चौड़ा भाग याद रखिए: सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले, फिर क्रमशः कम महत्त्व के विवरण।

4(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क क्यों होती है ? कारण सहित बताइए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन में किसी विषय की गहरी जानकारी, विशिष्ट शब्दावली तथा उसकी पृष्ठभूमि की समझ आवश्यक होती है।
- अलग डेस्क पर उस क्षेत्र के जानकार पत्रकार और संपादक समाचारों का चयन, विश्लेषण तथा संपादन करते हैं।

चरण 1: विशेष लेखन की जरूरत समझिए अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान या कानून जैसे क्षेत्रों की खबरों में केवल घटना बता देना पर्याप्त नहीं होता। उनके कारण, संदर्भ और प्रभाव स्पष्ट करने पड़ते हैं। इसके लिए विषय का अध्ययन और संबंधित तकनीकी शब्दों का सही ज्ञान जरूरी है। सामान्य जानकारी के आधार पर लिखने से अर्थ बदलने या तथ्य गलत होने की आशंका रहती है।

चरण 2: अलग डेस्क का कार्य बताइए विशेष डेस्क पर संबंधित विषय के जानकार पत्रकार काम करते हैं। वे सूचनाओं की जाँच करते हैं, महत्वपूर्ण तथ्यों को चुनते हैं और उनका उचित विश्लेषण करते हैं। संपादन के समय कठिन शब्दों को पाठक के लिए सरल और स्पष्ट बनाते हैं। इससे विषय की निरंतर निगरानी होती है तथा सामग्री की शुद्धता, गहराई और विश्वसनीयता बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन के लिए विषय का गहरा ज्ञान, तकनीकी शब्दावली और विश्लेषण की क्षमता चाहिए। इसलिए समाचार पत्र-पत्रिकाओं में अलग डेस्क होती है। वहाँ विशेषज्ञ पत्रकार संबंधित समाचारों का चयन, जाँच तथा संपादन करके पाठकों तक सटीक, सरल और विश्वसनीय जानकारी पहुँचाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विषय-विशेष की जानकारी की जरूरत को अलग डेस्क के चयन, तथ्य-जाँच और संपादन के काम से जोड़िए।

5(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उल्लेख कीजिए कि अभिव्यक्ति के अधिकार में लेखन किस प्रकार सहायक है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में पहले से तैयार सामग्री के स्थान पर स्वतंत्र चिंतन, कल्पना और अपने अनुभवों के आधार पर विचार विकसित किए जाते हैं।
- अभिव्यक्ति का अधिकार अपने विचार और अनुभूतियाँ प्रकट करने की स्वतंत्रता देता है। लेखन उन्हें स्पष्ट, क्रमबद्ध और दूसरों तक पहुँचाने योग्य बनाता है।

चरण 1: प्रश्न के दोनों पक्ष पहचानना उत्तर में पहले ऐसे विषयों पर लेखन का अर्थ स्पष्ट करना है जिन पर लिखने की पहले से तैयारी न हो। उसके बाद लेखन और अभिव्यक्ति के अधिकार का संबंध बताना है। केवल कल्पना का उल्लेख पर्याप्त नहीं होगा; विचारों को व्यवस्थित करने और अपनी स्वतंत्र आवाज सामने लाने की भूमिका भी समझानी चाहिए।

चरण 2: उत्तर की रूपरेखा बनाना अर्थ बताते समय मौलिक दृष्टि, अनुभव, कल्पना और तत्काल विचार-विकास को आधार बनाएँ। दूसरे पक्ष में यह बताएँ कि लिखने से व्यक्ति अपनी भावनाएँ पहचानता है, तर्क स्पष्ट करता है और समाज के सामने अपना मत रख सकता है। यहाँ किसी विशेष विधा का प्रारूप आवश्यक नहीं है; दोनों पक्षों को जोड़ता हुआ संक्षिप्त अनुच्छेद उपयुक्त है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन का अर्थ ऐसे विषयों पर मौलिक ढंग से लिखना है जिनकी पहले से तैयारी न हो। इसमें लेखक अपने अनुभव, कल्पना और स्वतंत्र चिंतन से विचार विकसित करता है। लेखन व्यक्ति को अपनी भावनाएँ, विचार और असहमति स्पष्ट तथा व्यवस्थित रूप में व्यक्त करने का अवसर देता है। इससे झिझक दूर होती है और अपनी बात कहने का आत्मविश्वास बढ़ता है। इस प्रकार लेखन अभिव्यक्ति के अधिकार को व्यवहार में लाने और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने में सहायक है।

चरण 4: निष्कर्ष अप्रत्याशित विषयों पर लेखन स्वतंत्र चिंतन और मौलिक अभिव्यक्ति का अभ्यास है। लिखित रूप व्यक्ति को अपनी

बात स्पष्ट और प्रभावी ढंग से रखने में समर्थ बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो जुड़े भागों में सोचें: पहले अप्रत्याशित लेखन का अर्थ, फिर स्वतंत्र अभिव्यक्ति में उसकी सहायता।

5(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाट्य रूपांतरण में कहानी की कथात्मक सामग्री को मंच पर अभिनीत होने योग्य दृश्य, संवाद और क्रियाओं में बदला जाता है। मूल कथ्य और केंद्रीय संघर्ष सुरक्षित रहते हैं।
- कहानी का वर्णन और पात्रों का अंतर्मुख नाटक में सीधे कथन के स्थान पर संवाद, अभिनय, हावभाव और मंचीय संकेतों से व्यक्त किए जाते हैं।

चरण 1: मूल कथा और मंच की आवश्यकताएँ पहचानना कहानी को नाटक बनाते समय उसका केंद्रीय भाव, मुख्य घटनाएँ, पात्र और संघर्ष समझना आवश्यक है। सभी वर्णन मंच पर ज्यों के त्यों नहीं रखे जा सकते। इसलिए कथ्य को बनाए रखते हुए घटनाओं को दृश्य और अंकों में बाँटा जाता है। पात्रों की संख्या तथा घटनास्थलों का चयन मंच पर प्रस्तुति की सुविधा को ध्यान में रखकर किया जाता है।

चरण 2: उत्तर के प्रमुख बिंदु चुनना रूपांतरण में संवाद पात्रानुकूल और स्वाभाविक हों तथा कथा को आगे बढ़ाएँ। वर्णनात्मक अंशों को अभिनय, दृश्य और क्रिया में बदलना चाहिए। समय, स्थान, प्रवेश-प्रस्थान, प्रकाश और ध्वनि के संकेत प्रस्तुति में सहायता करते हैं। उत्तर में इन तकनीकी पक्षों के साथ यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि नाटक का प्रभाव तथा मूल कहानी का आशय सुरक्षित रहे।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय मूल कथ्य, केंद्रीय भाव और संघर्ष सुरक्षित रखने चाहिए। कथानक को मंचन के अनुकूल दृश्यों और अंकों में बाँटना आवश्यक है। पात्रों की संख्या सीमित तथा उनके संवाद स्वाभाविक, संक्षिप्त और चरित्रानुकूल हों। वर्णनात्मक अंशों और मनोभावों को अभिनय, संवाद तथा दृश्यात्मक क्रियाओं में बदलना चाहिए। समय, स्थान, मंच-सज्जा, प्रकाश और ध्वनि की व्यावहारिक सीमाओं का ध्यान रखना चाहिए। पात्रों के प्रवेश-प्रस्थान और आवश्यक हावभाव के रंगनिर्देश देकर नाटक को सुसंगत एवं प्रभावशाली बनाना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष सफल नाट्य रूपांतरण मूल कहानी के भाव को सुरक्षित रखते हुए उसे संवाद, अभिनय और मंचीय क्रिया में ढालता है। उसकी प्रभावशीलता के लिए कथ्य की संगति और मंचन की व्यावहारिकता दोनों आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: कथ्य, दृश्य-विभाजन, संवाद, अभिनय और मंचीय संकेत याद रखें; उत्तर में कहानी के वर्णन को मंचीय क्रिया में बदलने की बात अवश्य लिखें।

5(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटकों में संवादों पर विशेष ध्यान देना क्यों आवश्यक है ? तर्क सहित लिखिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; नाटक की कथा, पात्र और परिवेश मुख्यतः संवाद तथा ध्वनियों से स्पष्ट होते हैं।
- संवाद पात्रानुकूल, संक्षिप्त, स्वाभाविक और सुनते ही समझ में आने वाले होने चाहिए।

चरण 1: उत्तर की रूपरेखा उत्तर में रेडियो की श्रव्य प्रकृति से आरंभ करके दृश्य के अभाव, पात्रों की पहचान और कथानक की गति में संवादों की भूमिका बतानी है। इसके बाद भाषा तथा प्रस्तुति के आवश्यक गुणों के साथ तर्क पूरा करना है।

चरण 2: तर्क को विकसित करना मंच पर वेशभूषा, चेहरे के भाव और दृश्य सामग्री जो सूचना देते हैं, रेडियो पर उसका आवश्यक अंश

संवादों से व्यक्त होता है। फिर भी पात्रों की बातचीत को सूचना की सूची नहीं बनाना चाहिए; वह घटनाक्रम के साथ स्वाभाविक ढंग से सामने आए। अलग-अलग पात्रों की भाषा और बोलने का ढंग उनकी पहचान बनाए रखते हैं। लंबे, जटिल वाक्य सुनने में कठिन होते हैं, इसलिए छोटे वाक्य अधिक उपयोगी हैं। आवाज़ के उतार-चढ़ाव और उचित विराम से प्रसन्नता, भय या तनाव का अनुभव कराया जा सकता है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक में दर्शक पात्रों, उनके हावभाव तथा मंच को देख नहीं सकता; वह केवल सुनता है। इसलिए संवादों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। संवाद ही पात्रों का परिचय देते, घटनाओं को आगे बढ़ाते और स्थान, समय तथा मनःस्थिति का संकेत करते हैं। वे सहज, संक्षिप्त, स्पष्ट और पात्रानुकूल हों, ताकि श्रोता सुनते ही आशय समझ ले। स्वर, विराम और लहजे से भाव तथा तनाव उभरते हैं। प्रभावी संवाद ध्वनि-प्रभावों के साथ श्रोता की कल्पना में दृश्य रचकर नाटक को सजीव बनाते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष रेडियो नाटक में संवाद कथा और पात्रों को श्रव्य रूप में सजीव बनाते हैं; इसलिए उनकी स्पष्टता, स्वाभाविकता और प्रभावशीलता अनिवार्य है।

त्वरित सुझाव: रेडियो के उत्तर में पहले केवल सुनने की सीमा बताइए, फिर उससे संवाद की प्रत्येक आवश्यकता जोड़िए।

6. छोटा मेरा खेत चौकोना

कागज़ का एक पन्ना,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष;
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

[5 अंक]

6(i). 'छोटा मेरा खेत' कविता के मूल भाव के बारे में सही कथन है :

[1 अंक]

- (A) कविता को व्यवसाय के रूप में देखा गया है।
- (B) इसमें श्रव्य बिंब का प्रयोग किया गया है।
- (C) यह ऐसा खेत है जिसके चार कोने हैं।
- (D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

सही उत्तर: (D) यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है।

हल:

अवधारणा:

- कागज़ का खेत और शब्दों के अंकुर काव्य-सृजन के प्रतीक हैं। अंतिम पंक्ति में रचना का रस बाँटने पर भी कम न होने की बात कही गई है।
- प्रतीक का अर्थ पूरे काव्यांश की सृजन-प्रक्रिया और अंतिम पंक्तियों के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश से अर्थ निकालना कविता में क्षणिक प्रेरणा से उत्पन्न रचना का आनंद अनंत समय तक मिलने का भाव है। इसलिए सृजन-कर्म की स्थायी शक्ति ही इसका केंद्रीय विषय है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) में व्यवसाय की बात है, पर कविता में खरीद-बिक्री नहीं है। (B) में श्रव्य बिंब को मूल भाव माना गया है, जबकि प्रश्न पूरे काव्यांश का संदेश पूछता है। (C) चौकोने खेत के बाहरी रूप तक सीमित है और कागज़ तथा रचना के प्रतीक को नहीं खोलता।

चरण 3: निष्कर्ष यह सृजन कर्म के शाश्वत भाव की कविता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले बीज से फल तक के रूपक को कविता-सृजन से जोड़िए और फिर उसी अर्थ वाला विकल्प चुनिए।

6(ii). कविता की रचना-प्रक्रिया के संदर्भ में 'अंधड़' क्या है ?

[1 अंक]

(A) अलंकारों की अधिकता

(B) भाषा की कठिनता

(C) भावनाओं का आवेग

(D) पंक्तियों की अधिकता

सही उत्तर: (C) भावनाओं का आवेग

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में अंधड़ आने के बाद क्षण का बीज बोया जाता है और कल्पना से शब्द अंकुरित होते हैं। यह क्रम रचना की मानसिक प्रक्रिया दिखाता है।
- प्रतीक का अर्थ पूरे काव्यांश की सृजन-प्रक्रिया और अंतिम पंक्तियों के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश से अर्थ निकालना अंधड़ मन में अचानक उठने वाले तीव्र भावनात्मक आवेग का प्रतीक है। इसी आवेग से रचना की प्रेरणा मिलती है और कोई अनुभव विचार के बीज के रूप में आकार लेता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) अलंकारों की अधिकता रचना की सजावट हो सकती है, प्रेरणा का आवेग नहीं। (B) भाषा की कठिनता का यहाँ कोई संकेत नहीं है। (D) पंक्तियों की संख्या बताता है, जबकि अंधड़ रचना से पहले उठने वाली आंतरिक हलचल है।

चरण 3: निष्कर्ष अंधड़ भावनाओं का आवेग है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले बीज से फल तक के रूपक को कविता-सृजन से जोड़िए और फिर उसी अर्थ वाला विकल्प चुनिए।

6(iii). कवि अपने छोटे खेत में कौन-से बीज बोता है ?

[1 अंक]

- (A) चावल के
- (B) विचारों के
- (C) ईर्ष्या के
- (D) कागज़ के

सही उत्तर: (B) विचारों के

हल:

अवधारणा:

- कवि कागज़ के पन्ने को खेत और रचना की आरंभिक प्रेरणा को बीज के रूप में देखता है। यहाँ कृषि के शब्द साहित्य-सृजन के प्रतीक बने हैं।
- प्रतीक का अर्थ पूरे काव्यांश की सृजन-प्रक्रिया और अंतिम पंक्तियों के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश से अर्थ निकालना क्षण के बीज से कल्पना की सहायता द्वारा शब्दों के अंकुर फूटते हैं। अतः यह बीज कोई वास्तविक अनाज नहीं, कवि के मन में उत्पन्न विचार और अनुभव का बीज है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) चावल वास्तविक कृषि की उपज है, जबकि खेत कागज़ का पन्ना है। (C) ईर्ष्या का काव्यांश में कोई उल्लेख या संकेत नहीं मिलता। (D) कागज़ स्वयं खेत का प्रतीक है, उसमें बोए जाने वाले बीज का नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि अपने छोटे खेत में विचारों के बीज बोता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले बीज से फल तक के रूपक को कविता-सृजन से जोड़िए और फिर उसी अर्थ वाला विकल्प चुनिए।

6(iv). कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है ?

[1 अंक]

- (A) भवन-निर्माण से
- (B) कृषि-कर्म से
- (C) शिक्षा-दीक्षा से
- (D) व्यवसाय से

सही उत्तर: (B) कृषि-कर्म से

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बीज, अंकुर, पल्लव, पुष्प, फल, रोपाई और कटाई जैसे शब्द एक ही कृषि-प्रक्रिया को व्यक्त करते हैं।
- प्रतीक का अर्थ पूरे काव्यांश की सृजन-प्रक्रिया और अंतिम पंक्तियों के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश से अर्थ निकालना कवि ने विचार से कविता बनने की प्रक्रिया को बीज से फसल बनने की प्रक्रिया के समान बताया है। कागज़ खेत है, विचार बीज है और शब्दों से विकसित साहित्य उस खेत की फलदायी उपज है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) भवन-निर्माण में प्रयुक्त नींव, दीवार आदि का यह चित्र नहीं है। (C) शिक्षा-दीक्षा की प्रक्रिया का उल्लेख नहीं है। (D) व्यवसाय में लाभ और लेन-देन प्रमुख होते हैं, जबकि यहाँ रचना के अनंत रस की बात है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने कवि-कर्म की तुलना कृषि-कर्म से की है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पहले बीज से फल तक के रूपक को कविता-सृजन से जोड़िए और फिर उसी अर्थ वाला विकल्प चुनिए।

6(v). 'कटाई अनंतता की' का प्रतीकार्थ है :

[1 अंक]

- (A) रोपाई के बाद कटाई
- (B) कटाई कर्म अनंत
- (C) साहित्य कालजयी
- (D) फलों की काट-छाँट

सही उत्तर: (C) साहित्य कालजयी

हल:

अवधारणा:

- रोपाई क्षण की और कटाई अनंतता की कहकर कविता रचना की प्रेरणा तथा उसके दीर्घकालीन प्रभाव में अंतर करती है।
- प्रतीक का अर्थ पूरे काव्यांश की सृजन-प्रक्रिया और अंतिम पंक्तियों के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: काव्यांश से अर्थ निकालना किसी एक क्षण में जन्मी रचना का आनंद पीढ़ी-दर-पीढ़ी लिया जा सकता है। उसका रस बाँटने से घटता नहीं; इसलिए अनंत कटाई साहित्य के कालजयी और चिरस्थायी प्रभाव का संकेत है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) केवल रोपाई के बाद कटाई होने का सामान्य क्रम बताता है और प्रतीकार्थ नहीं खोलता। (B) वास्तविक कटाई को अनंत मान लेता है। (D) फलों की काट-छाँट तक सीमित है; कविता साहित्य के अक्षय आनंद की बात करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कटाई अनंतता की का प्रतीकार्थ है कि साहित्य कालजयी है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पहले बीज से फल तक के रूपक को कविता-सृजन से जोड़िए और फिर उसी अर्थ वाला विकल्प चुनिए।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

फूलों के खिलने से कविता का क्या संबंध है ? 'कविता के बहाने' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में फूल का खिलना और कविता की रचना, दोनों सौंदर्य तथा आनंद के प्रस्फुटन के प्रतीक हैं।
- प्राकृतिक फूल की सीमा के सामने कविता के विस्तार को रखकर कवि रचना की अनश्वरता समझाता है।

चरण 1: समानता को पहचानें फूल खिलकर अपने रंग और सुगंध से परिवेश को सुंदर बनाता है। इसी प्रकार कविता मनुष्य के भीतर भावों, कल्पना और संवेदना का विकास करती है। दोनों मनुष्य के अनुभव को समृद्ध करते हैं और जीवन के प्रति आकर्षण जगाते हैं। दोनों का संबंध सृजन तथा आनंद से है; इसलिए कवि फूल के खिलने को कविता के खिलने से जोड़ता है।

चरण 2: अंतर समझकर उत्तर लिखें फूल का सौंदर्य उसके जीवनकाल और स्थान से बँधा है। कविता का प्रभाव उस सीमा से आगे जाता है; पढ़े जाने पर वह अलग-अलग समयों और मनुष्यों में नया अनुभव जगाती है। इसीलिए कविता के खिलने की व्यापकता फूल नहीं जान सकता।

आदर्श उत्तर: फूल का खिलना और कविता का सृजन, दोनों सुंदरता और आनंद की अभिव्यक्तियाँ हैं। फूल रंग और सुगंध बिखेरता है, कविता संवेदना और कल्पना का सौंदर्य फैलाती है। किंतु फूल का जीवन सीमित है, जबकि कविता समय और स्थान की सीमाएँ पार करके पाठकों के मन में खिलती रहती है। कविता के इसी असीम विस्तार को फूल नहीं जान सकता।

चरण 3: निष्कर्ष फूल और कविता में सृजन का संबंध है, पर कविता का आनंद फूल के क्षणभंगुर सौंदर्य से अधिक व्यापक और स्थायी है।

त्वरित सुझाव: पहले फूल और कविता की समानता लिखें, फिर समय और स्थान की सीमा के आधार पर उनका अंतर स्पष्ट करें।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“ ‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता हर ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा करती है, जो दुख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है।” कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में दूरदर्शन का साक्षात्कार मानवीय पीड़ा को प्रदर्शन की वस्तु बनाने की प्रवृत्ति प्रकट करता है।
- कविता की आलोचना का केंद्र शारीरिक अक्षमता नहीं, बल्कि उससे लाभ उठाने वाली असंवेदनशील दृष्टि है।

चरण 1: कार्यक्रम के व्यवहार को समझें साक्षात्कारकर्ता अपाहिज व्यक्ति की वास्तविक परिस्थिति समझने या सहायता करने के बजाय उसके दुख को कैमरे के सामने उभारना चाहता है। वह ऐसे प्रश्न करता है जिनसे व्यक्ति रो पड़े और दर्शकों पर भावुक प्रभाव पड़े। इस व्यवहार में मनुष्य की गरिमा कार्यक्रम की सफलता से पीछे चली जाती है।

चरण 2: व्यापक संकेत और आदर्श उत्तर यह प्रसंग केवल एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं है। किसी की विवशता को अपनी प्रसिद्धि, लाभ या प्रदर्शन का साधन बनाने वाला हर व्यक्ति इस व्यंग्य के दायरे में आता है। सहानुभूति दिखाने और संवेदना का व्यापार करने में यही अंतर है।

आदर्श उत्तर: कविता में साक्षात्कारकर्ता अपाहिज व्यक्ति की सहायता के बजाय उसकी पीड़ा को रोचक कार्यक्रम बनाना चाहता है। वह उसे रुलाकर दर्शकों को भावुक करने का प्रयास करता है। उसका उद्देश्य मानवीय दुख समझना नहीं, कार्यक्रम को प्रभावशाली बनाना है। इस प्रकार कविता उन सभी असंवेदनशील लोगों पर व्यंग्य करती है, जो दूसरों की यातना को अपने लाभ और प्रसिद्धि का साधन बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कविता दूसरों के दुख को संवेदना से समझने के बजाय लाभ और प्रदर्शन के लिए बेचने वाली प्रवृत्ति का विरोध करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में साक्षात्कारकर्ता का रुलाने का प्रयास अवश्य जोड़ें; उसी से पीड़ा के व्यापार का आरोप प्रमाणित होता है।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कवितावली’ में तुलसीदास ने अपने समाज की किन सामाजिक बुराइयों का उल्लेख किया है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली में आजीविका का संकट, भूख और दरिद्रता तत्कालीन समाज की पीड़ा को सामने लाते हैं।
- जाति-पाँति और सामाजिक अहंकार के प्रति तुलसीदास की उपेक्षा उनके मानवीय दृष्टिकोण को प्रकट करती है।

चरण 1: आर्थिक और नैतिक संकट पहचानें किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी न मिलना व्यापक आजीविका-संकट का चित्र है। भूख की विवशता इतनी तीव्र है कि लोग अपने बच्चों तक को बेचने को बाध्य हैं। यह व्यक्तिगत दुर्बलता के साथ समूची सामाजिक व्यवस्था के संकट का भी संकेत है। पेट की आग मनुष्य को उचित-अनुचित कर्म करने के लिए धकेलती है।

चरण 2: सामाजिक भेदभाव सहित उत्तर दें तुलसीदास जाति, कुल और प्रतिष्ठा के अहंकार को स्वीकार नहीं करते। उनके प्रति प्रयुक्त सामाजिक तिरस्कार जातिगत संकीर्णता का परिचायक है। उत्तर में केवल गरीबी की सूची नहीं, उससे उपजती मानवीय विवशता और ऊँच-नीच का उल्लेख भी आवश्यक है।

आदर्श उत्तर: तुलसीदास ने कवितावली में दरिद्रता, भुखमरी, बेरोजगारी और आजीविका के संकट का चित्रण किया है। किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक सभी जीविका से वंचित हैं। भूख के कारण लोग अनुचित कर्म करने तथा अपने बच्चों को बेचने तक को विवश हैं। उन्होंने जाति-पाँति, ऊँच-नीच और कुल के अहंकार जैसी सामाजिक संकीर्णताओं पर भी चोट की है।

चरण 3: निष्कर्ष कवितावली आर्थिक बदहाली से उत्पन्न नैतिक पतन और जातिगत भेदभाव, दोनों को उजागर करती है।

त्वरित सुझाव: किसान, व्यापारी और सेवक की जीविका का संकट जोड़कर आर्थिक बुराइयों समझाएँ तथा जातिगत संकीर्णता अलग से लिखें।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

संसार में विभिन्न कष्टों और दुःखों से घिरकर भी अपने आस-पास खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है ? 'आत्म परिचय' कविता के आधार पर बताइए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की आत्म-परिचय कविता में जीवन के संघर्षों के साथ प्रेम और मस्ती का सह-अस्तित्व है।
- कवि संसार का भार उठाते हुए भी अपने हृदय में प्रेम बचाए रखता है और भावों को गीत बनाता है।

चरण 1: कवि का जीवन-दृष्टिकोण पहचानें कवि कठिनाइयों से अपरिचित नहीं है। वह जग-जीवन का भार लेकर चलता है, फिर भी जीवन में प्यार बनाए रखता है। उसका मस्ती भरा स्वभाव संघर्ष से भागना नहीं, बल्कि दुखों के बीच भी आत्मीयता और आनंद बनाए रखने का तरीका है।

चरण 2: संक्षिप्त आदर्श उत्तर अपनी पीड़ा को गीत में व्यक्त करना और दूसरे मनुष्यों के प्रति प्रेम बनाए रखना भीतर के तनाव को सृजनात्मक रूप देता है। उत्तर का आधार कविता का प्रेमपूर्ण और मस्त जीवन-दृष्टिकोण होना चाहिए।

आदर्श उत्तर: कष्टों के बीच भी हृदय में प्रेम, आत्मीयता और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि बनाए रखकर खुशी फैलाई जा सकती है। कवि की तरह दुखों को गीतों में ढालना और उन्मुक्त भाव से प्रेम बाँटना अपने साथ आसपास के वातावरण को भी आनंदमय बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रेम, सहज मस्ती और दुख की सृजनात्मक अभिव्यक्ति से कठिन परिस्थितियों में भी आनंद फैलाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को कविता के प्रेम और मस्ती से जोड़ें; केवल सामान्य सलाह देने से कविता का आधार अस्पष्ट रह जाएगा।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'पतंग' कविता में कवि ने बाल-मनोविज्ञान को किस प्रकार चित्रित किया है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाल-मनोविज्ञान में कल्पनाशीलता, उत्साह, निर्भयता और खेल में तल्लीनता प्रमुख हैं।
- कविता में पतंग उड़ाते बच्चों की गतिविधियों से उनके स्वच्छंद मन का परिचय मिलता है।

चरण 1: कविता के प्रसंग को समझें कवि बच्चों की उमंग को उनके शरीर और गतिविधियों से मूर्त करता है। उनके लिए पतंग उड़ाना केवल मनोरंजन नहीं, अपनी कल्पना और आकांक्षा को आकाश तक पहुँचाने का अनुभव है। वे खेल में इतने डूब जाते हैं कि छत की ऊँचाई और गिरने का खतरा भी उन्हें रोक नहीं पाता। यह बालमन की सहज निर्भयता है, किसी सोची-समझी वीरता का प्रदर्शन नहीं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि ने पतंग उड़ाते बच्चों की उमंग, कल्पनाशीलता और निर्भयता के माध्यम से बाल-मनोविज्ञान चित्रित किया है। वे खेल में इतने तल्लीन हैं कि गिरने का भय भूल जाते हैं। गिरकर भी फिर उठना उनकी अदम्य आशा और उत्साह दर्शाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता में बालमन की स्वच्छंद कल्पना, खेल में तल्लीनता तथा बाधाओं के बाद भी बना रहने वाला उत्साह उभरता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में बच्चों की गतिविधि को उससे प्रकट होने वाली मानसिक विशेषता से जोड़िए।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

कवि बादल का आह्वान किस रूप में कर रहा है और क्यों ? 'बादल राग' कविता के संदर्भ में लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल क्रांति और सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है।
- किसान की पीड़ा तथा शोषण से मुक्ति की आकांक्षा बादल के आह्वान का आधार है।

चरण 1: प्रतीक और कारण पहचानें बादल की गर्जना में कवि परिवर्तन की शक्ति देखता है। कविता का कृषक शोषण से दुर्बल हो चुका है; उसका सार चूस लिया गया है। इसलिए वह बादल को विप्लव के वीर रूप में पुकारता है। वर्षा से खेती को जीवन मिलने का आशय सामाजिक धरातल पर शोषितों को नया जीवन मिलने से जुड़ता है। बादल का रूप केवल दृश्य-सौंदर्य तक सीमित नहीं है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि बादल का आह्वान क्रांति के वीर और शोषितों के उद्धारक के रूप में करता है। शोषण से दुर्बल किसान उसकी ओर आशाभरी दृष्टि से देखता है। बादल की गर्जना अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलकर पीड़ित जन को नया जीवन देने का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक है, जिससे किसान और शोषित समाज को मुक्ति तथा नवजीवन की आशा है।

त्वरित सुझाव: बादल का प्रतीकात्मक रूप बताकर किसान की दशा को उसके आह्वान का कारण बनाइए।

9. मन खाली नहीं रहना चाहिए, इसका मतलब यह नहीं है कि वह मन बंद रहना चाहिए। जो बंद हो जाएगा, वह शून्य हो जाएगा। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। शेष सब अपूर्ण है। इससे मन बंद नहीं रह सकता। सब इच्छाओं का निरोध कर लो, यह झूठ है और अगर 'इच्छानिरोधस्तपः' का ऐसा ही नकारात्मक अर्थ हो तो वह तप झूठ है। वैसे तप की राह रेगिस्तान को जाती होगी, मोक्ष की राह वह नहीं है। ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। लोभ का यह जीतना नहीं है कि जहाँ लोभ होता है, यानी मन में, वहाँ नकार हो ! यह तो लोभ की ही जीत है और आदमी की हार। आँख अपनी फोड़ डाली, तब लोभनीय के दर्शन से बचे तो क्या हुआ ? ऐसे क्या लोभ मिट जाएगा ? और कौन कहता है कि आँख फूटने पर रूप दीखना बंद हो जाएगा ? सच्चा ज्ञान सदा अपूर्णता के बोध को हम में गहरा करता है। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है।

[5 अंक]

9(i). गद्यांश के अनुसार 'आँख फोड़ना' का अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) शारीरिक विकलांगता को बढ़ावा देना
- (B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना
- (C) दृष्टि को स्थायी रूप से खो देना
- (D) तपस्या का सबसे उच्च स्थान प्राप्त करना

सही उत्तर: (B) लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गद्यांश में प्रयुक्त उदाहरण का लाक्षणिक अर्थ पहचानने का है।
- लेखक बाहरी साधन नष्ट करने और मन के लोभ को जीतने में अंतर करता है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ ग्रहण करें आँख फोड़ देने से लोभनीय वस्तु का बाहरी दर्शन रुक सकता है, किंतु मन का लोभ समाप्त नहीं होता। लेखक इस उदाहरण से लोभ से बचने के लिए देखने के साधन को ही नष्ट करने की निरर्थकता दिखाता है।

चरण 2: विकल्प जाँचें (B) इसी लाक्षणिक आशय को बताता है। (A) में विकलांगता को प्रोत्साहन बताया गया है, जो लेखक का उद्देश्य नहीं है। (C) केवल शाब्दिक परिणाम कहता है। (D) गलत है, क्योंकि लेखक ऐसे नकारात्मक तप की आलोचना करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: लोभ से बचने हेतु साधन को ही नष्ट कर देना।

त्वरित सुझाव: उदाहरण का शाब्दिक परिणाम चुनने से पहले उसके पीछे लेखक का तर्क पहचानिए।

9(ii). लेखक के अनुसार 'मन को बंद कर देना' क्यों सही नहीं है ?

[1 अंक]

- (A) इससे मन प्रतिष्ठित रूप से शांत हो जाता है।
- (B) इससे लोभ का नाश हो जाता है।
- (C) इससे मन जड़ हो जाता है।
- (D) इससे मन सपने देखना बंद कर देता है।

सही उत्तर: (C) इससे मन जड़ हो जाता है।

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न लेखक के स्पष्ट कथन के आधार पर कारण पहचानने का है।
- मन को विवेकपूर्वक सक्रिय रखना और उसे बंद कर देना अलग स्थितियाँ हैं।

चरण 1: निर्णायक कथन देखें लेखक स्पष्ट कहता है कि ठाठ देकर मन को बंद कर रखना जड़ता है। इच्छाओं के सर्वथा नकार से लोभ पर विजय नहीं मिलती; इससे मन की सक्रियता और ग्रहणशीलता बाधित होती है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (C) जड़ता को कारण बताता है, इसलिए सही है। (A) में शांति को परिणाम मानना गद्यांश के विरुद्ध है। (B) भी गलत है, क्योंकि लेखक इसे लोभ की जीत कहता है। (D) में सपने बंद होने की बात गद्यांश में नहीं कही गई।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: इससे मन जड़ हो जाता है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर लेखक के सीधे कथन से मेल खाने वाला विकल्प चुनिए।

9(iii). गद्यांश के अनुसार 'सच्चा ज्ञान' किस प्रकार की भावना से प्राप्त हो सकता है ?

[1 अंक]

- (A) पूर्णता की भावना से
- (B) अपूर्णता के बोध से
- (C) पूर्णता के नाश से
- (D) मनमानी छूट से

सही उत्तर: (B) अपूर्णता के बोध से

हल:

अवधारणा:

- सच्चे ज्ञान का संबंध अपनी सीमाओं और अपूर्णता की पहचान से है।
- उत्तर गद्यांश के अंतिम कथन से निर्धारित होता है।

चरण 1: अंतिम कथन का आशय समझें लेखक के अनुसार सच्चा ज्ञान हमारे भीतर अपूर्णता का बोध गहरा करता है। अपनी सीमाओं को स्वीकार करने से मन सीखने और सार्थक कर्म करने के लिए खुला रहता है। यही विकल्पों में पूछा गया मूल भाव है।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें (B) सीधे अपूर्णता के बोध को व्यक्त करता है। (A) अपनी पूर्णता की भावना बताता है, जो कथन का विपरीत है। (C) पूर्णता के नाश की बात करता है, जिसका समर्थन नहीं है। (D) मनमानी छूट है, जो आत्मबोध या विवेक का पर्याय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: अपूर्णता के बोध से।

त्वरित सुझाव: ज्ञान संबंधी प्रश्न में अंतिम वाक्य के मुख्य पद अपूर्णता का बोध पर ध्यान दीजिए।

9(iv). गद्यांश के अनुसार लोभ से बचने का क्या उपाय है ?

[1 अंक]

- (A) मन को बंद रखना
- (B) मन को भरा रखना
- (C) मन को संयमित रखना
- (D) मन की इच्छा पूरी करना

सही उत्तर: (B) मन को भरा रखना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की आरंभिक स्थापना है कि मन खाली नहीं रहना चाहिए।
- मन का भरा होना सार्थक विषय से जुड़ना है; उसका बंद होना इच्छाओं का जड़ निषेध है।

चरण 1: आरंभ और तर्क जोड़ें लेखक मन को खाली न रखने की बात करता है और तुरंत स्पष्ट करता है कि इसका अर्थ मन बंद रखना नहीं है। सार्थकता से भरा मन अनावश्यक आकर्षणों का शिकार नहीं होता। इसलिए दिए गए विकल्पों में मन को भरा रखना आरंभिक स्थापना से सीधा मेल खाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से भेद करें (B) सही है। (A) को लेखक जड़ता कहकर नकारता है। (C) सामान्यतः उचित लग सकता है, किंतु यहाँ उपाय के लिए पाठ का विशिष्ट कथन मन खाली न रखना है। (D) हर इच्छा पूरी करने की बात है, जो लोभ से मुक्ति का उपाय नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है: मन को भरा रखना।

त्वरित सुझाव: सामान्य नैतिक सलाह से पहले गद्यांश के आरंभ में दिए विशिष्ट उपाय को चुनिए।

9(v). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

I. लोभ का नकार ही लोभ की जड़ है और यह व्यक्ति की हार है।

II. लोभ को दबाना ही उसे जीतना है।

III. संयमित मन ही लोभ पर विजय पा सकता है।

इन कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ?

[1 अंक]

- (A) कथन I सही है, कथन II गलत है।
- (B) कथन I गलत है, कथन II सही है।
- (C) कथन I और III सही हैं।
- (D) कथन II और III सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन I और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न कथनों को गद्यांश के तर्क से मिलाने का है।
- नकारात्मक दमन और विवेकपूर्ण संयम में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: कथन I और II जाँचें कथन I में लोभ के नकार को उसकी जड़ और व्यक्ति की हार कहा गया है। यहाँ नकार से आशय मन को बंद करके लोभ से भागना है; लेखक इसे लोभ की जीत और आदमी की हार कहता है। इस संदर्भ में कथन I सही है। कथन II गलत है, क्योंकि केवल दबाना लोभ को जीतना नहीं है।

चरण 2: कथन III तथा विकल्प जाँचें विवेकपूर्ण संयम में मन बंद नहीं होता, बल्कि अपनी अपूर्णता स्वीकार करके सक्रिय रहता है।

इसलिए कथन III सही है। (C) दोनों सही कथन I और III देता है। (A) में III छूट गया है। (B) और (D) गलत कथन II को सही बताते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है: कथन I और III सही हैं।

त्वरित सुझाव: नकार को मन बंद करने के अर्थ में पढ़िए और दमन को विवेकपूर्ण संयम से अलग रखिए।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ के आधार पर भक्तिन के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने आपको प्रभावित किया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में गुणों को पाठ की घटनाओं से पुष्ट किया जाता है। भक्तिन के व्यवहार में श्रमशीलता, स्वाभिमान और सेवा-निष्ठा दिखाई देती है।
- उत्तर में तीन अलग विशेषताएँ चुनकर उनके प्रमाण देना आवश्यक है। किसी एक गुण को अलग शब्दों में बार-बार लिखना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: विशेषताओं को घटनाओं से जोड़ना भक्तिन कठिन परिश्रम से घर का काम करती है और लेखिका की व्यवस्था सँभालती है। इसलिए उसकी कर्मठता स्पष्ट होती है। वह अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखती है और अपने जीवन के निर्णयों में दृढ़ रहती है; यह स्वाभिमान है। लेखिका से उसका संबंध केवल नौकरी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आत्मीय सेवा और साथ निभाने का बन जाता है। इन घटनाओं से उसके गुणों को ठोस आधार मिलता है। इन गुणों की चर्चा करते समय भक्तिन को सर्वथा दोषरहित बताना आवश्यक नहीं है। प्रश्न प्रभावित करने वाली विशेषताएँ पूछता है, इसलिए उसकी जिद जैसे दूसरे पक्षों के विस्तार की अपेक्षा इन तीन सकारात्मक गुणों पर केंद्रित रहना उचित है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भक्तिन की कर्मठता, स्वाभिमान और सेवाभाव मुझे प्रभावित करते हैं। वह कठिन परिस्थितियों में भी परिश्रम से पीछे नहीं हटती और लेखिका का घर सँभालती है। वह अपने निर्णयों पर दृढ़ रहती है तथा अपना आत्मसम्मान बनाए रखती है। लेखिका के प्रति उसकी आत्मीय निष्ठा केवल नौकरी का संबंध नहीं है; वह सुख-दुःख में साथ देने वाली सच्ची सेविका बन जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का परिश्रम, आत्मसम्मान और आत्मीय सेवा उसे प्रभावशाली व्यक्तित्व बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: तीन गुण चुनें और हर गुण के साथ पाठ से जुड़ा एक व्यवहार बताएँ।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“माँगे हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं पर त्याग का कहीं नामोनिशान नहीं है।” इस पंक्ति से लेखक का क्या तात्पर्य है ? ‘काले मेघा पानी दे’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक सामाजिक जीवन में अधिकारों की माँग और कर्तव्य के पालन के बीच असंतुलन की आलोचना करता है।
- पाठ में जीजी का बीज बोने वाला उदाहरण समझाता है कि कुछ देने पर ही आगे प्राप्ति संभव होती है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ स्पष्ट करना लेखक देखता है कि लोग सुविधाओं और लाभों की बड़ी माँगें करते हैं, पर सामूहिक हित के लिए अपना थोड़ा-सा साधन छोड़ने को तैयार नहीं होते। जीजी समझाती हैं कि किसान अच्छी फसल के लिए पहले बीज धरती में डालता है। इसी प्रसंग से त्याग और प्राप्ति का संबंध स्पष्ट होता है। यहाँ आशय सामाजिक स्वार्थ पर चोट करना है, केवल पानी खर्च करने का समर्थन करना नहीं। पंक्ति में माँग और त्याग का विरोध सामने रखकर लेखक व्यक्ति को अपने आचरण की जाँच करने के लिए प्रेरित करता है।

यदि सब केवल लेने की इच्छा रखें, तो सामूहिक जीवन का संचालन कठिन होगा। इसीलिए उत्तर में अधिकार के साथ कर्तव्य का उल्लेख भी जरूरी है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक का तात्पर्य है कि लोग समाज और देश से अनेक सुविधाएँ तथा अधिकार चाहते हैं, लेकिन उनके लिए अपना स्वार्थ छोड़ने को तैयार नहीं होते। जीजी के बीज बोने वाले उदाहरण की तरह कुछ पाने के लिए पहले कुछ देना आवश्यक है। लेखक स्वार्थपूर्ण माँगों की आलोचना करके त्याग, सहयोग और अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्वाह की आवश्यकता बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष सुविधाएँ माँगने के साथ समाज के लिए योगदान और त्याग करना भी आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: जीजी के बीज बोने के उदाहरण को त्याग और सामूहिक हित से जोड़ें।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

आंबेडकर की कल्पना के अनुसार एक 'आदर्श समाज' कैसा होना चाहिए ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर के आदर्श समाज का आधार स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व है। इन मूल्यों को परस्पर जुड़े हुए समझना चाहिए।
- सामाजिक गतिशीलता का अर्थ है कि बदलाव और विचारों के आदान-प्रदान के मार्ग खुले रहें; जन्म व्यक्ति की प्रगति की सीमा न बने।

चरण 1: आदर्श समाज के आधार पहचानना आंबेडकर ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जिसमें किसी एक भाग का परिवर्तन दूसरे भागों तक पहुँच सके। विविध हितों में संपर्क हो और लोग अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकें। सामाजिक संबंध कठोर जातिगत बंधनों में न जकड़े हों। लोकतंत्र उनके लिए शासन-पद्धति के साथ मिल-जुलकर जीवन जीने की पद्धति भी है। पारस्परिक सम्मान और साझेदारी इस समाज की आवश्यक शर्तें हैं। समानता का अर्थ सबकी व्यक्तिगत क्षमताओं को एक जैसा मान लेना नहीं, बल्कि जन्मजन्म भेदभाव हटाकर आगे बढ़ने का अवसर देना है। भ्रातृत्व इस अवसर को आत्मीयता और सामाजिक सहयोग से जोड़ता है।

चरण 2: लगभग 60 शब्दों में उत्तर आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित होना चाहिए। उसमें जन्म या जाति के कारण ऊँच-नीच न हो और सभी को विकास के समान अवसर मिलें। समाज गतिशील हो, विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क तथा अनुभवों का आदान-प्रदान हो। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे का सम्मान करे। ऐसा लोकतांत्रिक समाज सबको सहभागी बनाकर साथ रहने की भावना विकसित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वतंत्रता, समान अवसर, पारस्परिक सम्मान और सामाजिक गतिशीलता आदर्श समाज के प्रमुख आधार हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों मूल्यों के साथ सामाजिक संपर्क और परिवर्तन की गुंजाइश भी बताएँ।

11(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

श्रम विभाजन और श्रमिक-विभाजन में अंतर 'जाति प्रथा और श्रम विभाजन' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन में कार्यों का बँटवारा होता है, जबकि श्रमिक-विभाजन में मनुष्यों को स्थायी समूहों में बाँटा जाता है।
- आंबेडकर जाति-व्यवस्था की आलोचना इसलिए करते हैं कि वह व्यक्ति की रुचि और योग्यता की जगह जन्म को व्यवसाय का आधार बनाती है।

चरण 1: अंतर का आधार समझना श्रम-विभाजन समाज के विभिन्न कार्यों को व्यवस्थित करता है। उसमें व्यक्ति की क्षमता और इच्छा

के अनुसार कार्य चुनने तथा बदलने की गुंजाइश रह सकती है। जाति-आधारित श्रमिक-विभाजन मनुष्यों को ऊँच-नीच के खाँचों में बाँध देता है। अतः आंबेडकर दोनों को समान नहीं मानते।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन में कार्य योग्यता और आवश्यकता के अनुसार बाँटे जाते हैं तथा व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता होती है। श्रमिक-विभाजन में जाति और जन्म के आधार पर व्यक्तियों के व्यवसाय निश्चित कर उन्हें ऊँच-नीच में बाँटा जाता है; उनकी रुचि और क्षमता उपेक्षित रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष कार्य बाँटना और जन्म के आधार पर काम करने वालों को स्थायी श्रेणियों में बाँटना अलग व्यवस्थाएँ हैं।

त्वरित सुझाव: अंतर लिखते समय कार्य बनाम व्यक्ति तथा योग्यता बनाम जन्म का आधार स्पष्ट करें।

11(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘शिरीष के फूल’ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने शिरीष के फूलों के माध्यम से जीवन के किस सत्य को उजागर किया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष का कोमल फूल भीषण गर्मी में भी खिलता है; इसलिए वह प्रतिकूल परिस्थितियों में सहज और प्रसन्न रहने का प्रतीक है।
- हजारीप्रसाद द्विवेदी जीवन में अनासक्ति, जिजीविषा और दूसरों को आनंद देने की शक्ति को महत्त्व देते हैं।

चरण 1: प्राकृतिक उदाहरण का आशय शिरीष की कोमलता को दुर्बलता नहीं समझना चाहिए। तपती लू और गर्मी के बीच उसका फूलना बताता है कि कठिन बाहरी परिस्थितियाँ भीतर की जीवनशक्ति को अनिवार्य रूप से नष्ट नहीं कर सकतीं। लेखक इस विरोधाभास से जीवन का सत्य समझाते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक ने शिरीष के फूलों द्वारा बताया है कि विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य अनासक्त, प्रसन्न और जीवंत रह सकता है। भीषण गर्मी में खिलकर सुगंध बिखेरता शिरीष सिखाता है कि कठिनाइयों से हारने के बजाय दूसरों को आनंद देते रहना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष प्रतिकूलता में भी अजेय जिजीविषा, अनासक्ति और सहज प्रसन्नता बनाए रखने का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गर्मी और कोमल फूल का विरोध दिखाकर उससे मिलने वाली जीवन-दृष्टि स्पष्ट कीजिए।

11(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

पहलवान की ढोलक मृतप्राय गाँव वालों के लिए कैसे जीवनदायिनी थी ? ‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महामारी से ग्रस्त गाँव में ढोलक की आवाज निराशा और मृत्यु के भय के विरुद्ध मानसिक संबल बनती है।
- कहानी में जीवनदायिनी होने का आशय साहस और जीने की इच्छा जगाना है; ढोलक कोई औषधि नहीं है।

चरण 1: गाँव की परिस्थिति और ढोलक की भूमिका गाँव में महामारी से मृत्यु और शोक का वातावरण है। रात का सन्नाटा लोगों के भय को बढ़ाता है। ऐसे समय लुट्टन की ढोलक सुनकर उन्हें किसी संघर्षशील जीवित मनुष्य की उपस्थिति का अनुभव होता है। उसकी ताल निराशा के बीच प्रतिरोध की प्रेरणा देती है। यहाँ संगीत का महत्त्व मनुष्य की टूटती हुई इच्छाशक्ति को सहारा देने में है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से भयभीत गाँव वालों को रात के सन्नाटे में पहलवान की ढोलक साहस देती थी। उसकी ताल मृत्यु के आतंक को चुनौती देकर निराश लोगों में जीने की इच्छा जगाती थी। इस मानसिक संबल के कारण ढोलक उनके लिए

जीवनदायिनी थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक की ताल मृत्यु के भय के बीच ग्रामीणों की हिम्मत और जीवन के प्रति आशा बनाए रखती थी।

त्वरित सुझाव: जीवनदायिनी शब्द का अर्थ मानसिक संबल से जोड़िए और महामारी की पृष्ठभूमि अवश्य लिखिए।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“यशोधर जी चाहते हैं कि उन्हें समाज का सम्मानित बुजुर्ग माना जाए।” ‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी में यह कथन किस संदर्भ में आया है ? इस कथन के संदर्भ में यशोधर बाबू के मनोभावों को स्पष्ट कीजिए। क्या यशोधर बाबू की ऐसी चाह अनुचित है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू की पारंपरिक जीवन-दृष्टि और परिवार की आधुनिक सोच के बीच पीढ़ियों का अंतर दिखाई देता है।
- सम्मान की इच्छा में उनकी उम्र, अनुभव, आत्मसम्मान और पारिवारिक अपनत्व की आवश्यकता जुड़ी है; इसका अर्थ परिवार पर निरंकुश अधिकार नहीं है।

चरण 1: कथन का प्रसंग पहचानिए विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर परिवार की ओर से आयोजित आधुनिक ढंग का समारोह यशोधर बाबू की सहज रुचियों से मेल नहीं खाता। बेटे का दिया हुआ ड्रेसिंग गाउन भी उन्हें पूरी आत्मीयता का अनुभव नहीं कराता। उन्हें लगता है कि परिवार उनकी इच्छा और मनःस्थिति को समझने के स्थान पर अपने ढंग से उनकी भूमिका निर्धारित कर रहा है। इसी पृष्ठभूमि में समाज के सम्मानित बुजुर्ग माने जाने की उनकी आकांक्षा सामने आती है।

चरण 2: मनोभाव और मूल्यांकन की योजना यशोधर बाबू किशनदा के आदर्शों तथा पुराने संस्कारों से जुड़े हैं। बदलते घरेलू वातावरण में उनका अकेलापन और असहजता केवल नई वस्तुओं के विरोध तक सीमित नहीं है; वे अपने अनुभव की स्वीकृति और बच्चों का स्नेह चाहते हैं। उत्तर में इस भावनात्मक आवश्यकता को स्पष्ट करते हुए यह संतुलन रखिए कि बुजुर्गों का सम्मान उचित है और नई पीढ़ी की स्वतंत्रता भी स्वीकार्य है।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर यह कथन विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर परिवार द्वारा आयोजित आधुनिक समारोह और यशोधर बाबू की असहजता के संदर्भ में आया है। पुराने संस्कारों तथा किशनदा के आदर्शों से जुड़े यशोधर बाबू परिवार की नई जीवनशैली में अपने को उपेक्षित अनुभव करते हैं। वे केवल उपहार या औपचारिक उत्सव नहीं, अपनी भावनाओं की समझ, आत्मीयता और अनुभव का आदर चाहते हैं। उनकी चाह अनुचित नहीं है; प्रत्येक बुजुर्ग सम्मान और अपनत्व का अधिकारी है। किंतु सम्मान की अपेक्षा के साथ उन्हें भी नई पीढ़ी के बदलते विचारों को समझना चाहिए। पारस्परिक संवाद और संवेदनशीलता से ही पीढ़ियों की दूरी घट सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू की सम्मान और आत्मीयता की चाह उचित है; परिवार में उसका आधार पारस्परिक समझ और संवेदनशील संवाद होना चाहिए।

त्वरित सुझाव: प्रसंग, उपेक्षा का अनुभव और अपनी तर्कपूर्ण राय—इन तीनों को उत्तर में जोड़िए; केवल पीढ़ी-अंतर की सामान्य चर्चा न कीजिए।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

“मैं अपनी आँखों और कानों में प्राणों की सारी शक्ति लगा कर – दम रोककर मास्टर के हाव-भाव, ध्वनि, गति, चाल और रस पीता रहता।”
‘जूझ’ कहानी के इस कथन को स्पष्ट करते हुए लिखिए कि एक अध्यापक कैसे अपने छात्रों का आदर्श-स्वरूप हो सकता है ? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न आनंद यादव के आत्मकथात्मक पाठ ‘जूझ’ में शिक्षक के प्रेरक व्यक्तित्व की पहचान करता है।
- शिक्षक का आदर्श उसके विषयज्ञान, शिक्षण-कौशल और छात्र की प्रतिभा के प्रति संवेदनशीलता से बनता है।

चरण 1: कथन का प्रसंग और आशय लेखक अपने मराठी अध्यापक सौंदलगेकर के कविता-पाठ में पूरी तरह डूब जाता था। अध्यापक की आवाज़, लय, भावभंगिमा और अभिनय कविता के भावों को सजीव कर देते थे। लेखक का दम रोककर सुनना इसी एकाग्रता और रसास्वादन को व्यक्त करता है। ऐसी तल्लीनता शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विषय के माध्यम से बने गहरे आत्मीय संबंध को भी व्यक्त करती है। वह केवल शब्दार्थ ग्रहण नहीं करता, बल्कि शिक्षक से काव्य को अनुभव करने की कला सीखता है।

चरण 2: उत्तर की रूपरेखा लगभग 100 शब्दों के उत्तर में पहले सौंदलगेकर के प्रभावशाली कविता-पाठ का उल्लेख करें। फिर स्पष्ट करें कि उनका सहज व्यवहार, कविताएँ रचने का उदाहरण और छात्र को मिलने वाला प्रोत्साहन किस प्रकार अनुकरण की प्रेरणा देते हैं। आदर्श शिक्षक की चर्चा को पाठ के प्रसंग से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श उत्तर ‘जूझ’ में सौंदलगेकर मास्टर कविता को लय, स्वर और भावपूर्ण अभिनय के साथ पढ़ाते थे। उनकी ध्वनि, गति और हावभाव से काव्य सजीव हो उठता था। लेखक अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर उसका रस ग्रहण करता और खेतों में काम करते समय उसी प्रकार कविता गुनगुनाता था। मास्टर स्वयं भी कविताएँ लिखते थे; उनसे प्रेरित होकर लेखक में कविता रचने का विश्वास जागा। इस प्रकार अध्यापक अपने विषय के प्रति प्रेम, प्रभावशाली शिक्षण, आत्मीय व्यवहार और प्रतिभा को प्रोत्साहन देकर छात्रों का आदर्श बन सकता है। उसका आचरण छात्र को अनुकरण, सृजन और आत्मविकास की दिशा देता है।

चरण 4: निष्कर्ष सौंदलगेकर का प्रभावशाली कविता-पाठ और सृजनशील व्यक्तित्व लेखक के लिए प्रेरणा बने; शिक्षक का आचरण और प्रोत्साहन ही उसे छात्रों का आदर्श बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सौंदलगेकर के कविता-पाठ से लेखक की अपनी काव्यरचना तक की प्रेरणा-शृंखला अवश्य जोड़ें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘अतीत में दबे पाँव’ पाठ में मुअनजो-दड़ो के किन भौतिक अवशेषों का वर्णन किया गया है ? उस सभ्यता की जीवन-शैली, सामाजिक संरचना और संस्कृति को भी स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न ओम थानवी के पाठ में वर्णित मुअनजो-दड़ो के अवशेषों और उनसे उभरते सामाजिक जीवन का संबंध जाँचता है।
- अवशेषों का उल्लेख करके स्वच्छता, नगर-योजना, उपयोगिता और सांस्कृतिक रुचि का निष्कर्ष स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: अवशेषों की पहचान पाठ में पकी ईंटों के घर, चौड़ी सड़कें, गलियाँ, ढकी नालियाँ, कुएँ, स्नानागार और अन्नागार जैसे अवशेष मिलते हैं। घरों के आँगन तथा जल-निकासी की व्यवस्था नगरवासियों की दैनिक आवश्यकताओं के प्रति सजगता दिखाती है। मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और मिट्टी के बर्तन उनके शिल्प और सौंदर्यबोध के साक्ष्य हैं।

चरण 2: जीवन और संस्कृति की व्याख्या उत्तर में अवशेषों की सूची के बाद उनका अर्थ बताना चाहिए। विकसित नगर-योजना सार्वजनिक सुविधा और स्वच्छता को महत्व देती थी। भव्य राजमहलों या मंदिरों का स्पष्ट प्रभुत्व न मिलना तथा सामान्य नागरिकों की सुविधाओं का विस्तार इस सभ्यता की विशेषता है। इसे पूर्ण सामाजिक समानता का प्रमाण न मानते हुए अपेक्षाकृत कम दिखावटी भव्यता के रूप में समझें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श उत्तर ‘अतीत में दबे पाँव’ में मुअनजो-दड़ो के पकी ईंटों के मकानों, सड़कों, गलियों, ढकी नालियों, कुओं, विशाल

स्नानागार और अन्नागार का वर्णन है। मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और मिट्टी के बर्तन भी उस संस्कृति का परिचय देते हैं। व्यवस्थित जल-निकासी और स्नान की सुविधाएँ स्वच्छ, सुनियोजित तथा सुविधासंपन्न नागरिक जीवन दर्शाती हैं। मकानों के आकारों में अंतर सामाजिक भिन्नता का संकेत देता है, किंतु राजमहलों और विशाल धार्मिक स्मारकों की प्रधानता दिखाई नहीं देती। यहाँ सार्वजनिक उपयोगिता और सामान्य नागरिक का महत्व उभरता है। कलात्मक वस्तुएँ विकसित शिल्प, सौंदर्यबोध और समृद्ध सांस्कृतिक जीवन की साक्षी हैं।

चरण 4: निष्कर्ष मुअनजो-दड़ो के अवशेष सुव्यवस्थित नगर-जीवन, सार्वजनिक स्वच्छता, नागरिक सुविधाओं और विकसित शिल्प-संस्कृति का प्रमाण देते हैं।

त्वरित सुझाव: हर प्रमुख अवशेष के साथ उसका जीवनगत संकेत जोड़ें; केवल भवनों की सूची लिखकर उत्तर पूरा न करें।